Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Arjun Singh Bhaghel*

Assistant Professor, Commerce, Rani Durgavati Government PG College, Mandala (MP)

सारांश :– पर्यटन क्षेत्र देश की आर्थिक संवृद्धि और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन देश का वृहद सेवा उद्योग है। यह एक महत्वपूर्ण सेवा उन्मुखी क्षेत्रक है जो सकल राजस्व और विदेशी मुद्रा के अर्जन की दृष्टि से त्वरित विकास करता है। यह सेवा प्रदाताओं का समिश्रण है। सरकारी और निजी दोनों की इसमें संयुक्त सेवा है। जिसमें यात्रा एजेंट और संचालक, हवाई, भू और समुद्री परिवहन, गाइड हॉटलो के मालिक, अतिथि गृह, रेस्तरां, और दुकाने शामिल है। पर्यटन किसी देश में रहने वाले लोगों के जीवन–स्तर तथा रहन–सहन की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाए जाने के साथ ही रोजगार–सृजन का भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। पर्यटन से स्थानीय कर प्राप्तियों के रूप में अर्थव्यवस्था को जो लाभ होता है, उससे सामाजिक निर्धनता उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा,आवास,पेयजल,तथा स्वच्छता, मनोरंजन, के अनेक अवसरों आदि आधारभूत सेवाओं की व्यवस्थाओं को वास्तविकता में साकार किया जा सकता है। यही नही सामाजिक असमानताओं को दूर करने की दृष्टि से भी पर्यटन सकारात्मक प्रभाव डालता है। पर्यटन पर्यावरण की गुणवत्ता बढ़ाने, अधिक रोजार सृजन करने के लिए प्रोत्साहन देता है। साथ ही साथ अर्थव्यवस्था के विकास को भी अभिप्रेरित करता है।

शब्दकुंजी :– पर्यटन, सकलघरेलू उत्पाद, विनियोग, विदेशी मुद्रा अर्जन,चिकत्सा पर्यटन।

-----------------------------------X-----------------------------------

आज के समय में जहां हर देश की पहली जरूरत अर्थव्यवस्था को मजबूत करना हैं वहीं आज पर्यटन के कारण कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन उद्योग के इर्द–गिर्द घूमती है। यूरोपिय देश, तटीय अफ्रीकी देश, पूर्वी एशियाई देश, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया आदि ऐसे देश है, जहां पर पर्यटन उद्योग से प्राप्त आय वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। पर्यटन सिर्फ हमारे जीवन में खुशियों के पल को वापस लागे में ही मदद नहीं करता है, बल्कि यह किसी भी देश के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन का महत्व और पर्यटन की लोकप्रियता को देखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1980 से 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इसी दिन 1970 विश्व पर्यटन संगठन का संविधान स्वीकार किया गया था।

पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा क्षेत्र है। जो वैश्विक स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 11 प्रतिशत योगदान देता है। भारत में यह अभी भी 6.7 प्रतिशत ही है। जबकि पड़ोसी देशों यथा चीन(8.6) श्रीलंका (8.8) इण्डोनेशिया(9.2) मलेशिया(12.9) तथा थाइलैण्ड(13.9) मे यह हमसे बहुत अधिक है। प्रथम पंचवर्षीय योजना के समय भारत में केवल 17 हजार विदेशी पर्यटक आए थे जो सन 2017 तक लगभग 77 लाख विदेशी पर्यटक प्रति वर्ष हो चुका था। वर्ष 2013–14 में विदेशी पर्यटकों से देश को 1 लाख 20 हजार करोड़ रूपये की आय हुई थी। लेकिन आज भी भारत की विश्व पर्यटन में हिस्सेदारी आधा प्रतिशत (0.5) से भी कम है। इसी तरह घरेलू पर्यटन की दर एवं मात्रा विगत दो दशकों में अत्यधिक तेजी से बढ़ी है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत किए गए शोध पत्र में अध्ययन का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग के प्रभाव का अध्ययन कर भविष्य में पर्यटन उद्योग की समस्या एवं सम्भावनाएं को ज्ञात करना है। पर्यटन के नये क्षेत्रों का विकास तथा विदेशी मुद्रा अर्जन में इसकी भूमिका को समझना साथ ही साथ पर्यटन उद्योग में रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करने एवं पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक सुझावों को शामिल करना अध्ययन का उद्देश्य है।

शोध की प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार पर्यटन मंत्रालय के बुलेटिन शोध सर्वे एवं वार्षिक रिपोर्ट से द्वितीयक संदर्भ आकड़े प्राप्त किये गये है। अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए सरलतम एवं व्यवहारिक सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण :–

पर्यटन भारत का सबसे विशाल सेवा उद्योग है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन क्षेत्र का प्रत्यक्ष योगदान 37 प्रतिशत है जबकि कुल प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष योगदान 6.8 प्रतिशत है। देश के रोजगार मे पर्यटन क्षेत्र का प्रत्यक्ष योगदान 4.4 प्रतिशत है, जबकि कुल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान 10.2 प्रतिशत तथा

अर्द्धकुशल श्रमिकों को भी बेहतर रोजगार उपलब्ध कराता है। भारत में पर्यटन क्षेत्र इस बात का प्रमाण है, कि पिछले दशक में इस क्षेत्र में संतोषजनक बढोतरी हुई है। भारत मे वर्ष 2012 के दौरान 60 लाख 58 हजार विदेशी पर्यटक आए जबकि 2012 मे घरेलू सैलानियों की संख्या एक अरब 2 करोड़ 70 लाख रही है। महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में पर्यटन का विशेष योगदान है। पर्यटन के क्षेत्र में कार्यरत कुल श्रमिक बल में 70 प्रतिशत महिलाएं है। पर्यटन निम्न आयवर्ग महिलाओं के लिए भी आय के बेहतर स्त्रोत विकसित करने में सक्षम है। वैश्विक स्तर पर भी अन्य क्षेत्रों के मुकाबले पर्यटन क्षेत्र में लगभग दोगुनी संख्या में महिलाएं कार्यरत है। इस दृष्टि से पर्यटन क्षेत्र समाज में समानता तथा सामाजिक न्याय को समर्थन देने का भी माध्यम है। 12वी पंचवर्षीय योजना में तेजी से विकसति होते सेवा क्षेत्र के बनिस्बत पर्यटन क्षेत्र में कम से कम 12 प्रतिशत की वृद्धि करने का लक्ष्य रखा गया था ही साथ घरेलू पर्यटन में होने वाली उच्च वृद्धि दर को कायम रखने का प्रयास किया गया। पर्यटन क्षेत्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों पर भी योजना में ध्यान दिया गया है। वर्तमान में पर्यटन के समक्ष अनेक चुनौतियों है जैसे– कौशल विकास, आधारभूत–ढांचागत विकास, विपणन तथा ब्रांड प्रोत्साहन, उत्पादों की व्यापक श्रेणी, उत्तरदायी पर्यटन, साफ–सफाई एवं स्वच्छता तथा विभिन्न गतिविधियों के बीच सुसंगतता। इन चुनौतिया से निपटने के लिए 12 वीं पंचवर्षीय योजना में 2.49 करोड़ रूपये नए रोजगारों के सृजन का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही '' हुनर से रोजगार'' पहल के अन्तर्गत कौशल विकास के लिए कदम उठाये गये है।

पर्यटन उद्योग की भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। अन्य उद्योगों की तुलना में पर्यटन क्षेत्र में कम विनियोग से ज्यादा से ज्यादा रोजागार का सृजन होता है। विदेशी मुद्रा के अर्जन में पर्यटन का तीसरा स्थान है। भारत का पर्यटन क्षेत्र घरेलू पर्यटकों के साथ–साथ विदेशी पर्यटकों का भी गन्तव्य स्थल है। भारतीय पर्यटन में 26 विरासत स्थल, 25 जैव भौगोलिक झोन, 3 को टूरिज्म 6 हजार किलोमीटर समुद्री किनारा, एवं दर्जनों बीच, धार्मिक स्थल, सांस्कृतिक एवम् ग्रामीण पर्यटन के लिए श्रेष्ठ किस्म के स्थान है। पर्यटन में विनियोग गुणक प्रभाव देता है। गरीबी एवं बेराजगारी दूर करने का यह प्रभावी मंत्री सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई प्रकार की नीतियां बनाई है। पर्यटन के विकास के लिए पर्यटन उद्योग के अंग, होटल ऐतिहासिक इमारतों, मनोरंजन, केन्द्रो, परिवहन के साधनों आदि का विकास किया जा रहा है।

भारत की ओर पर्यटको को आकर्षित करने के उद्देश्य से देश के बारे में जागरूकता लाने और घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटको की सुविधा के लिए विभिन्न राज्यों के पर्यटन विभागों के सहयोग से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए है। इनमें प्रमुख रूप से श्रीनगर में गोल्फ ओपन टूर्नामेंट, लेह में सिंधु दर्शन, नई दिल्ली में विरासत महोत्सव, हैदराबाद में अखिल भारतीय शिल्प मेला, जयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय विरासत महोत्सव, हिमाचल प्रदेश में पैराग्लाइडिंग प्रदर्शनी और पर्यटन सम्मेलन देहरादून में विशाल लोक महोत्सव का आयोजन, कोच्चि में अन्तर्राष्ट्रीय लोक प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया गया है। पर्यटन दुनियाभर के लोगों का पसंदीदा शगल रहा है। लेकिन पर्यटन में भी जल आधारित पर्यटन का अपना विशेष महत्व है। नदियों झीलों, जल प्रपातों के किनारे दुनियाभर में कई पर्यटन स्थलों का विकास हुआ है, और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। समुद्री पर्यटन वैश्विक स्तर पर पर्यटन क्षेत्र के अन्तर्गत तेजी से विकसित समुद्री शिपिंग नीति का अनुमोदन कर ढांचागत तथा अन्य सुविधाओं का विकास करके समुद्री पर्यटन को महत्वपूर्ण पर्यटन के क्षेत्र के रूप में विकसित करने का प्रयास किया जा रहा हैं चिकित्सा पर्यटन के लिए विपणन विकास सहायता योजना के (एम डी ए) संदर्भ में पर्यटन मंत्रालय द्वारा चिकित्सा पर्यटन से प्रदाताओं को वित्तीय सहायकता उलब्ध कराई जा रही है। पर्यटन के क्षेत्र में संभावित वृद्धि की रणनीति को अपनाकर ग्रामीण पर्यटन का विकास किया जा रहा है। ग्रामीण विकास की धारणा को विकास का एक मजबूत मंच बनाया जा सकता है जो भारत जैसे देश में बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी जहां कुल जनसंख्या की लगभग 74 फीसदी आबादी 70 लाख गांव में रहती है।

भारत जैसे देशों के लिए पर्यटन का खास महत्व होता है। भारत जैसे देश की पुरातात्विक विरासत या संस्कृति केवल दार्शनिक स्थल के लिए नहीं होती है। इसे राजस्व प्राप्ति का भी स्त्रोत माना जाता है और साथ ही पर्यटन क्षेत्रों से कई लोगों की रोजी–रोटी भी जुड़ी होती है। आज विश्व के लगभग सभी देशों में पुरानी और ऐतिहासिक इमारतों का संरक्षण किया जाने लगा है। भारत असंख्य मोहक एवं पर्यटन स्थलों का देश है। चाहे भव्य स्मारक हो, प्राचीन मंदिर या मकबरे हों, इनके चमकीले रंगों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रौद्योगिकी से चलने वाले इसके वर्तमान से अटूट सम्बन्ध है। केरल, शिमला,गोवा, आगरा, राजस्थान, मध्यप्रदेश,मथुरा काशी, जैसी जगहें विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा पहली पसंद रही है। भारत में पर्यटन की उपयुक्त क्षमता है। यहां सभी प्रकार के पर्यटकों को चाहे वे साहसिक यात्रा पर हों, सांस्कृतिक यात्रा पर या वह तीर्थयात्रा करने आए हों, या खूबसूरत समुद्री तटो पर निकले हो सबके लिये खूबसूरत जगहें है। अनेक लोग देश के प्रमुख स्थलों की यात्रा कर देश के पर्यटन उद्योग को समुन्नत बनाने में योगदान देते है। आधुनिक युग में पर्यटन को एक व्यवसाय का रूप देने में लोगों की बढ़ती आर्थिक समृद्धि का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है।

सारणी क्रमांक –1

2015 में भारत में विदेशी पर्यटक आगमन हेतु शीर्ष 10 स्त्रोत देश

क्र०	स्त्रोत देश	विदेशी पर्यटक आगमन	प्रतिशत हिस्सा
1	यूएसए	1213624	15.12
2	बंगलादेश	1133879	14.13
3	यूके	867601	10.81
4	श्रीलंका	299513	3.73
5	कनाडा	281306	3.50
6	मलेशिया	272941	3.40
7	आस्ट्रेलिया	263101	3.28
8	जर्मनी	248314	3.09
9	फ्रांस	230854	2.88
10	जापान	207415	2.58
	शीर्ष 10 देशो का योग	5018548	62.52
	अन्य	3008585	37.48
	कुल योग	13045681	100.00

भारत पर्यटन आंकड़े एक झलक 2015

सारणी –1

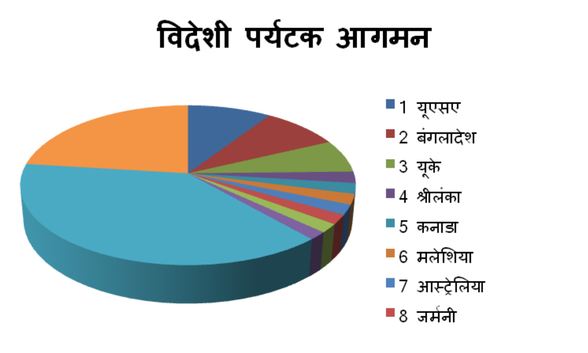

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 के कॉलम क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2015 मे शीर्ष 10 देशो में 5018548 पर्यटकों का भारत में आगमन हुआ है, वर्ष 2015 में 62.52 प्रतिशत पर्यटक शीर्ष 10 देशों से ही भारत में आगमन हुआ है। जबकि शेष 37.48 प्रतिशत पर्यटक अन्य देशो से भारत में आगमन हुआ है। इस अवधि में सर्वाधिक पर्यटक यू.एस.ए. (अमेरिका) से 1.213624 अर्थात 15.2 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ है।

सारणी क्रमांक –2

2015 में घरेलू पर्यटक यात्राओं मं भारत के शीर्ष 10 राज्यों ६ संघ राज्य क्षेत्रों की हिस्सेदारी

रैंक	**राज्य / संघ राज्य क्षेत्र**	**2015 में घरेलू पर्यटक यात्राएं**	
		संख्या	प्रतिशत हिस्सा
1	तमिलनाडु	333459047	23.3
2	उत्तर प्रदेश	204888457	14.3
3	आंध्र प्रदेश	121591054	8.5
4	कर्नाटक	119863942	8.4
5	महाराष्ट्र	103403934	7.2
6	तेलंगाना	94516316	6.6
7	मध्य प्रदेश	77975738	5.4
8	पश्चिम बंगाल	70193450	4.9
9	गुजरात	36288463	2.5
10	राजस्थान	35187573	2.5
	शीर्ष 10 राज्यों का योग	1197367974	83.6
	अन्य	234605820	16.4
		1431973794	100.0

भारत पर्यटन आंकड़े एक झलक 2015

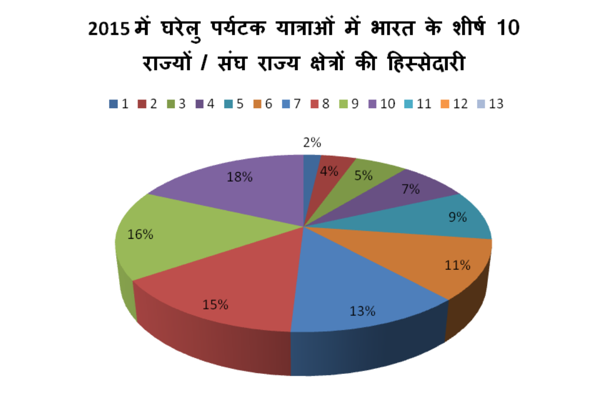

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2015 मे 333459047 घरेलू पर्यटकं यात्राओं मे हिस्सेदारी सर्वाधिक तमिलनाडू राज्य की है। जो कुल घरेलू पर्यटको मे 23.3 प्रतिशत हिस्सेदारी को इंगित करता है। दूसरे स्थान पर उत्तरप्रदेश 14.3 प्रतिशत तथा आंधप्रदेश 8.5 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ तृतीय स्थान पर रहा है। म0प्र0 का स्थान शीर्ष 10 राज्यों में 7 वां है। इसी अवधि में म.प्र. की हिस्सेदारी 5.4 प्रतिशत रही है इससे यह स्पष्ट होता है कि देश में शीर्ष 10 राज्यों की पर्यटन में हिस्सेदारी 83.6 प्रतिशत है। जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था में घरेलू पर्यटकों की सकारात्मक भूमिका को प्रदर्शित करता है।

सारणी क्रमांक –3

1999–2015 के दौरान विश्व और एशिया एवं पैसिफिक क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में भारत की हिस्सेदारी

वर्ष	अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन (मिलियन में)		भारत में विदेशी पर्यटक # आगमन (मिलियन में)	विश्व में भारत की प्रतिशत (%) हिस्सेदारी और रैंक		एशिया और पैसिफिक में भारत की प्रतिशत (%) हिस्सेदारी और रैंक	
	विश्व	एशिया और पैसिफिक		% हिस्सेदारी	रैंक	% हिस्सेदारी	रैंक
1999	633.8	97.6	2.48	0.39	46th	2.54	-
2000	683.3	109.3	2.65	0.39	50th	2.42	11th
2001	683.4	114.5	2.54	0.37	51st	2.22	12th
2002	703.2	123.4	2.38	0.34	54th	1.93	12th
2003	691.0	111.9	2.73	0.39	51st	2.44	11th
2004	762.0	143.4	3.46	0.45	44th	2.41	11th
2005	803.4	154.6	3.92	0.49	43rd	2.53	11th
2006	846.0	166.0	4.45	0.53	44th	2.68	11th
2007	894.0	182.0	5.08	0.57	41st	2.79	11th
2008	917.0	184.1	5.28	0.58	41st	2.87	11th
2009	883.0	181.1	5.17	0.59	41st	2.85	11th
2010	948.0	204.9	5.78	0.61	42nd	2.82	11th
2011	994.0	218.5	6.31	0.63	38th	2.89	9th
2012	1039.0	233.6	6.58	0.63	41st	2.82	11th
2013	1087.0	249.7	6.97	0.64	41st	2.79	11th
2014	1134.0	264.3	7.68	0.68	41st	2.91	12th
2015(अ)	1184.0	278.6	8.03	0.68	40th	2.88	11th

अ: अनंतिम # विदेश में रहने वाले देश के नागरिकों को छोड़कर।

स्रोत :- (i) वर्ष 2005 तक के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ पर्यटन मार्किट रूझान 2007 संस्करण
(ii) वर्ष 2006 और 2007 के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ बैरोमीटर जून 2009
(iii) यूएनडब्ल्यूटीओ पर्यटन संबंधी मुख्य बातें 2008 के लिए 2011 संस्करण और 2009 के लिए 2012 संस्करण
(iv) वर्ष 2010, 2011 तथा 2012 के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ बैरोमीटर अप्रैल, 2014
(v) 2013 के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ बैरोमीटर अगस्त, 2015
(vi) वर्ष 2014 और 2015 के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ बैरोमीटर मई, 2016

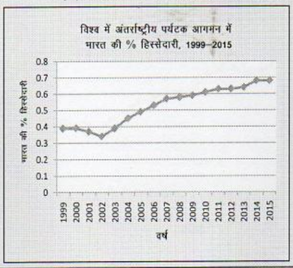

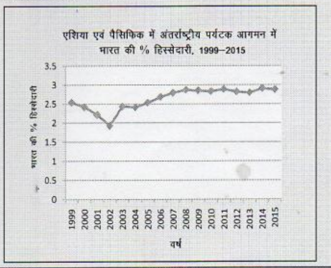

14 भारत पर्यटन आंकड़े एक झलक, 2015

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 3 के तथ्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विश्व में भारत की प्रतिशत हिस्सेदारी वर्ष 1999 में 0.39 प्रतिशत थी वहीं बढ़कर वर्ष 2015 में लगभग दुगुनी 0.68 प्रतिशत हो गई है। इसी तरह रैंक का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि जहां वर्ष 1999 में 46 वां रैंक था वर्ष 2015 में घटकर 40 वां रैंक हो गया। वर्ष 1999–2015 के बीच रैंक के उतार चढ़ाव जरूर हुआ है परन्तु हिस्सेदारी में लगातार बढ़ोतरी हुई है।

एशिया तथा पेसिफिक क्ष्ज्ञेत्र में भारत की रैंक पर नजर ड्ज्ञले तो पता चलता है कि वर्ष 1999 से 2015 के बीच रैंक 11 रहा है। प्रतिशत हिस्सेदारी के मामले में जहॉ वर्ष 1999 में 2.54 प्रतिशत थी वही वर्ष 2015 में 2.88 प्रतिशत हो गया है। यह हिस्सेदारी में बढ़ोतरी को प्रदर्शित करता है।

भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के आंकडों से स्पष्ट पता चलता है कि वर्ष 1999 में 2.48 मिलियन विदेशी परूटकों का भारत में आगमन हुआ है वर्ष 2015 में बढ़कर 8.03मिलियन का आगमन हुआ है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 1999–2015 के बीच आगमन मे चार गुना बढ़ोतरी हुई है।

अतः सारणी से स्पष्ट होता है कि पर्यटन के क्षेत्र मे भारत में पर्यटकों के आगमन में लगातार वृद्धि हो रही है जिससे अर्थव्यवस्था में सकारात्मक भूमिका को इंगित करता है।

संभावनाएं एवं चुनौतियां –

भारत में पर्यटन की अपार सम्भावनाएं है परन्तु दुर्भाग्यवश इन सम्भावनाओं का पूरा–पूरा दोहन नहीं हो पाया है। हमारा देश बहु धार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश है, यहां पर्यटन स्थलों की भी भरमार है परन्तु दुनियाभर के पर्यटन व्यवसाय में से भारत का हिस्सा नगण्य ही कहा जा सकता है। थाइलैण्ड जैसा छोटा सा एशियाई देश हमारी तुलना में कई गुणा अधिक पर्यटकों को आकर्षित कर पाने में सक्षम हैं । पर्यटन की दृष्टि से हमारे पिछड़ेपन के कई कारण है जिसमें से प्रमुख कारण है पर्यटकों को आकर्षित करने वाली सुविधाओं का अभाव। देश में सुदढ़ आधारभूत ढ़ांचे का न होना, अत्यधिक भीड़भाड़, सर्वत्र गंदगी, विदेशी पर्यटकों को भारत में आने से हतोत्साहित करती हैं। हमारी खस्ताहाल सडकें, ट्रेनों में शीघ्र आरक्षण न मिलना, बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी आदि पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। दूसरी और कश्मीर, आसाम तथा अन्य उत्तर पूर्वी राज्यो में व्याप्त हिंसा देश के लिए नुकसान देह सिद्ध हो रही है।

देश में ऐतिहासिक स्थल तो बहुत है परन्तु आस–पास का क्षेत्र प्रदूषण और गंदगी की चपेट में है। देश की राजधानी दिल्ली को ही ले, लाल किले तथा जाता मस्जिद का क्षेत्र बाजार और संकीर्ण गलियों के कारण आकर्षण से विहीन हुआ है। विश्व की आकर्षक एवं आलौकिक इमारत ताजमहल की भी घोर उपेक्षा की गई है। आगरा शहर देश के सर्वाधिक गंदे शहरों में से एक है। तो हम कैसे उम्मीद कर सकते है कि देश का पर्यटन व्यवस्था दिन–दूनी रात चौगनी उन्नति करें।

भारतीय पर्यटन उद्योग को विकसित करने में एक बड़ी बाधा जो वर्तमान में दिखाइ दे रही है। वह है आतंकवाद भारत के सभी प्रमुख स्थानों में अपनी जड़े जमा चुका है। कश्मीर में पर्यटन उद्योग आंतक के साये में दम तोड़ चुका है, जबकि इस स्थान को धरती का स्वर्ग के नाम से सम्बोधित किया जाता है। यहां का अदभूत प्राकृतिक सौंदर्य बंदूकों के शोर में पर्यटकों की नजरों से औझल होता जा रहा है। दूसरी ओर देश के विभिन्न हिस्सों में उग्रवाद की समस्या व्याप्त है। जिसके कारण राज्यों की कानून और व्यवस्था की स्थिति लडखड़ा गई है। विदेशी पर्यटकों का अपहरण उनके साथ ठगी, दुर्व्यवहार आदि घटनाओं में वृद्धि हो रही है। इन स्थितियों के कारण भी भारत की छवि दुनिया में धूमिल हो रही है। पर्यटन विकास में बाधक इन तत्वों को दूर करने के लिए हमें त्वरित उपाय करने होगे, साथ–साथ दीर्घकालिक रणनीति भी अपनानी होगी।

पर्यटन के क्षेत्र में सुधार के उपाय –

देश के पर्यटन को सचमुच बढाना हो तो हमें इसके लिए ठोस उपाय करने होंगे। पर्यटन स्थलों को साफ–सुथरा रखना, पर्यटन स्थलों तक पहुॅच को सुगम एवं आकर्षक बनाना, लोगों के निवास भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था करना, पर्यटन स्थलों को मनोरंजन से भरपूर बनाना, सड़क एवं संचार व्यवस्था को चुस्त–दुरूस्त रखना, लोगों को आकर्षित करने के लिए प्रचार करना आदि कुछ ऐसे उपाय है जिन्हें करके देश के पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सकता है। इसके साथ ही पर्यटन क्षेत्र में निजी उद्यमियों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है, क्योंकि केवल सरकारी प्रयास कारगर नहीं हो सकते है। सरकारी योजनाओं को बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने में भ्रष्टाचार आदि कई कारणों से लम्बा समय लग जाता है जो पर्यटन उद्योग की वृद्धि को रोक देता है।

वर्तमान समय में यह शुभ लक्षण है कि अब सरकार वस्तुस्थिति को समझकर हर क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भागीदारी को सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है। यदि सही दिशा में प्रयास किया जाए तो अगले पांच वर्षो में ही भारत में पर्यटन व्यवसाय के विकसित होने से देश को बेशकीमती विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होगी तथा भुगतान संतुलन की स्थिति को सुधारने में बहुत मदद मिलेगी। आज दुनिया में कई ऐसे देश है जहां की अर्थव्यवस्था में पर्यटन व्यवसाय का अंशदान काफी बड़ा है। सुनियोजित तरीके से हम भी अपना लक्ष्य हासिल कर सकते है।

निष्कर्ष–

पर्यटन की सफलता सुविधाओं के विकास पर निर्भर करती है, साथ ही जनता का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जनता का आथित्य और शिष्टता पर्यटकों को आकर्षित करती है। पर्यटन आदिकाल से ही मनुष्यों का स्वाभाव रहा है। परन्तु मध्य काल में स्थिति में काफी बदलाव आ गया भारतीय लोगों मे यह भ्रांत धारणा उत्पन्न हो गई थी कि समुद्र लॉघकर की गई यात्रा से धर्म भ्रष्ट हो जाता है। आधुनिक युग में पर्यटन सम्बंधी सभी भ्रांतियां समाप्त होने तथा आवागमन के साधनों के क्षेत्र में आए भारी बदलावों के कारण पर्यटन एक व्यवसाय के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। विभिन्न देशों के लोग दुनिया के अन्य देशों में जाकर वहॉ की सभ्यता और संस्कृति को निकट से देखने – समझने का प्रयास करते है। अनेक लोग देश के प्रमुख स्थलों की यात्रा कर देश के पर्यटन उद्योग को समुन्नत बनाने मे योगदान देते है। आधुनिक युग में पर्यटन को एक व्यवसाय का रूप देने में लोगों की बढ़ती आर्थिक समृद्धि का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है।

संदर्भ सूची–

म.प्र. के प्रमुख पर्यटन स्थल – डॉ. आनंद कुमार पाण्डेय, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।

पर्यटन मार्केटिंग एवं विकास – डॉ जगमोहन नेगी,, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।

पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद – डॉ. संजय कुमार शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।

इंटरनेशल टुरिजम – प्रेमधर, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली।

ग्रामीण पर्यटन – कुरूक्षेत्र फरवरी 2015 ।

रोमांच भरा भारत – इंडिया टूडे 21 अक्टूबर 2015

भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश – शोध पत्रिका 2014–2015

www.tourisminindia.com

Corresponding Author

Dr. Arjun Singh Bhaghel*

Assistant Professor, Commerce, Rani Durgavati Government PG College, Mandala (MP)

E-Mail – arjunsinghb9@gmail.com